

उत्तर शती का सांस्कृतिक विघटन

डॉ. आर.डी. मिश्र

उत्तर शती का सांस्कृतिक विघटन

- कॉपीराइट डॉ. आर. डी. मिश्र
- प्रकाशक अमन प्रकाशन
नमक मंडी, कटरा
सागर (म. प्र.) 470 002
☎ 63225 (O), 25445 (R)
- संस्करण प्रथम 2001
- मूल्य 125 रुपये मात्र
- लेजर कम्पोजिंग एक्टिव कम्प्यूटर्स
नमक मंडी, कटरा
सागर (म. प्र.) 470 002
☎ 63225 (O), 25445 (R)

क्रम

इतिहास और अतीत	१
काल और समय	९
सत्ता और सम्पत्ति	१७
क्रांति और आंदोलन	२७
अवसाद और विषाद	४५
आपदा - विपदा	५५
संस्कृति के बाज़ार : बाज़ार की संस्कृति	६३
मूल्य बोध और मानव अधिकार	७१
मूल्यों की संस्कृति : संस्कृति के मूल्य	७८
भारतीय राजनीति : नई सुबह	८४
मंच के प्रपंच	८९
अभिनंदन के नंदन वन	९८



आपदा - विपदा

'सृष्टि' शब्द निर्माण से बना है। ब्रह्मा को स्रष्टा कहा गया है। उसकी सर्जनात्मकता का प्रतिफल है, जीव जगत्। उनके सारे सृजन को जड़ चेतन में विभाजित किया गया है। इन दोनों का निर्माण और नियंत्रण भी उसी स्रष्टा के हाथों में ही होता है। इसी कारण उसे विश्वनियंता कहा जाता है। जीवन और मरण दोनों सृष्टि के अनिवार्य क्रम है। विलय होता है, प्रलय होता है। काल की शक्ति और इंगित पर जन्म मृत्यु ये सभी निरंतर चलते रहते हैं। ब्रह्मा को विधि भी कहा गया है और उसके पूरे प्रसार को विधि का विधान कहा जाता है। वह विधाता भी है। नाश और निर्माण का पूरा दर्शन और जीवन की अवधारणा उसी की अभिव्यक्ति का प्रसार है।

जिसे हम जीव जगत या प्राणि जगत कहते हैं उसका स्पंदन ही जीवन है। प्रगट होना, तिरोहित होना ये परस्पर एक ही क्रिया के दो स्वरूप माने जाते हैं। इसी कारण हम विश्वनियंता के प्रत्येक पल के सामने नतमस्तक है। यहीं पर प्रारब्ध की शक्ति भी इसी मान्यता के साथ जुड़ी है। किन्तु मैं यहाँ दर्शन की, पुराण और उपनिषद की मूल चेतना को आधार बनाकर अपनी बात नहीं कर रहा हूँ। मेरा मंतव्य वर्तमान की इस भ्रमित मनीषा की ओर संकेत करता है जिसके सामने हमने अपनी सारी अंतर्निहित शक्ति को भुलाकर अपने आपको अकर्मण्य या निष्क्रिय जैसा बना लिया है। हमारे पास बुद्धि और समय दोनों हैं किन्तु उनका संतुलन या सामंजस्य अथवा दोनों का विनियोग न होने से न सुलझी हुई मनीषा की प्रेरणा है और न

अमन प्रकाशन
नमक मण्डी, कटरा, सागर, (म.प्र.)
दूरभाष : (07582) 63225 (O) 25445 (R)